मेरे रोम–रोम में बसने वाले राम .....

मेरे रोम–रोम में बसने वाले राम – 2 ।।
जगत् के स्वामी, हे अन्तर्यामी ! मैं तुझसे क्या मांगू ?
मेरे रोम–रोम में..... ।।

आस के बंधन तोड़ चुके हैं, तुझ पर सब कुछ छोड़ चुके हैं ।
नाथ मेरे मैं क्यों सोचूं, तू जाने तेरो काम ।
जगत् के स्वामी, हे अन्तर्यामी ! मैं तुझसे क्या मांगू ?
मेरे रोम–रोम में..... ।।

तेरे चरण की धूल जो पाये, वो कंकर हीरा बन जाये ।
भाग्य मेरे जो मैंने पाया, इन चरणों में स्थान ।
जगत् के स्वामी, हे अन्तर्यामी ! मैं तुझसे क्या मांगू ?
मेरे रोम–रोम में..... ।।

भेद तेरा कोई क्या पहचाने, जो तुझ सा हो वो तुझे जाने ।
तेरे किये को हम क्या देवें, भले बुरे का नाम ।
जगत् के स्वामी, हे अन्तर्यामी ! मैं तुझसे क्या मांगू ?
मेरे रोम–रोम में..... ।।

निन्दक एकहु मति मिले, पापी मिले हजार।
इक निन्दक के शीश पर, लाख पाप का भार।।

जीते जी रक्तदान मरणोपरान्त नेत्रदान